श्री अर्गला स्तोत्रं

। मार्कंडेय उवाच ।

ओं जयत्वं देवि चामुंडे जय भूतापहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तुते ॥ 1

ओं जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥ 2

मधुकैटभविध्वंसि विधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 3

महिषासुर निर्नाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 4

धूम्रनेत्रवधे देवि धर्मकामार्थदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 5

रक्तबीजवधे देवि चंडमुंडविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 6

निशुंभशुंभनिर्नाशि त्रैलोक्यशुभदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 7

© 2022 Vedam Nadam

वंदितांघ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 8

अचिंत्यरूपचरिते सर्वशतृविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 9

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चापर्णे दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 10

स्तुवद्भ्योभक्तिपूर्वं त्वां चंडिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 11

चंडिके सततं युद्धे जयंती पापनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 12

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवी परंसुखम् ।
रूपं धेहि जयं देहि यशो धेहि द्विषो जहि ॥ 13

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि विपुलां श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 14

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 15

© 2022 Vedam Nadam

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽंबिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 16

विध्यावंतं यशस्वंतं लक्ष्मीवंतंच मां कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 17

देवि प्रचंड दोर्दंड दैत्यदर्पनिषूदिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 18

प्रचंडदैत्यदर्पघ्ने चंडिके प्रणतायमे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 19

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र संस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 20

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदांबिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 21

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 22

इंद्राणीपतिसद्भाव पूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 23

© 2022 Vedam Nadam

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानंदोदयेऽंबिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 24

भार्यां मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 25

तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्याचलोद्बवे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ 26

इदंस्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
सप्तशतीं समाराध्य वरमाप्नोति दुर्लभम् ॥ 27

॥ इति श्री अर्गला स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

© 2022 Vedam Nadam